International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal l -Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-I SSN: 2348-6848
p-I SSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

पारम्परिक लोक संचार के माध्यम के रूप में लोकगीत एवं लोकगाथा का महत्व

डॉ0 अन्जू पाण्डेय

असिस्टेण्ट प्रोफेसर,

हिन्दी विभाग, के0डी0एस0 महाविद्यालय पाली, सुबासपुर, जौनपुर

(वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर)

भारतीय संस्कृति अपने उद्भव काल से ही ग्राम्य रही है। यहाँ की ग्राम्य जनता के बीच जिन अनगढ़ लोककलाओं का विकास हुआ, वे हमारी अद्भुत सांस्कृतिक धरोहर हैं। ग्रामीण परिवेश के जनसंचार माध्यम श्रोताओं, दर्शकों तथा क्रियात्मक सहयोगियों के बीच अद्भुत सामंजस्य पर आधारित होते हैं। भारतीय लोक संचार माध्यमों में अधोलिखित विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं– 1. कठपुतली, 2. लोकगीत, 3. लोकगाथा,

4. लोककथा, 5. लोकनाट्य, 6. स्वांग, 7. रासलीला, 8. लोककला।

लोकगीत अथवा लोक साहित्यः–

लोकगीत निश्चल लोकमन के बिम्ब होते हैं, जिसमें बनावटीपन नहीं होता है। यह लोकगीत अकृत्रिम या सजीव होते हैं। लोकगीत अथवा लोक साहित्य की विषय सीमा अति विस्तृत है। इसके अन्तर्गत अधोलिखित विषय आते हैंः–

1. लोक जीवन के रीति–रिवाज, व्रत–त्योहार, पूजा–अनुष्ठान, उत्सव, शादी–विवाद आदि।
2. लोक प्रचलित कथाएं, गाथाएं, गीत, पहेलियां, कहावतें आदि।
3. जादू–टोना, भूत–प्रेत, मारण–मोहन आदि से सम्बन्धित टोटके तथा विभिन्न अंध विश्वास।
4. लोक नाटक, लोक नृत्य तथा व्यक्ति के विविध आंगिक क्रिया–कलाप।
5. ग्रामीण जीवन के खेल–कूद, बाल जीवन से सम्बन्धित खेल आदि।

लोक साहित्य की दृष्टि से भारत अत्यन्त धनी है। चूँकि यह विविधतापूर्ण देश है। प्रत्येक

प्रदेश की भाषा और संस्कृति में विभिन्नता है। सरकार के विविध योजनाओं के प्रचार–प्रसार के सशक्त माध्यम हेतु लोकगीत की भूमिका महत्वपूर्ण है। इन गीतों के माध्यम से पहुँचाया गया संदेश लोकमन को प्रभावित करता है। रेडियो, टेलीविजन आदि द्वारा सामान्य जनमानस तक किसी संदेश को पहुँचाये जाने में लोकगीत सशक्त माध्यम के रूप में सामने आ रहे हैं। इनके द्वारा प्रेषित संदेश जनमानस में गहराई से उतरता है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के बीच जन–जन तक देशभक्ति का संचार करने में लोकगीतों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है।

कुछ प्रसिद्ध लोक–गीतों के नाम इस प्रकार हैं:–

सोहर, व्याह गीत, झूमर, चौटा, होली, बारहमासा, वँवारा, कजरी, गारी, बिरहा, कीर्तन, निर्गुन, राधेश्यामी, पूर्वी, आल्हा, लोरिकायन, भरथरी, छठगीत, जट्ट–जट्टिन गीत आदि। ये लोकगीत ढोलक, तबला, मजीरा, सरंगी, खंजड़ी, डमरू, झाझ, डफली, इकतारा, बीन, तूम्बी, करताल, हारमोनियम आदि वाद्ययंत्रों की सहायता से अत्यन्त ही रोमांचक एवं मोहक हो उठते हैं। लोकगीत अथवा लोक साहित्य का कोई रचनाकार नहीं होता। ये मौखिक परम्परा में विकसित होते रहते हैं। अब इनका संकलन किया जाने लगा है।

3. **लोकगाथाएँ**:– लोकानुभूति और गेयता एवं कथातत्व के योग से लोकगाथा बनती है। लोकगाथाओं के तीन प्रकार हैं:–

(1) **प्रेम प्रधान लोक गाथाएं**:– हीर–राँझा, ढोला–मारू–रा–दूला भरथरि चरित्र।

(2) **वीरता प्रधान लोकगाथाएं**:– आल्हा, लोरिकायन

(3) **रोमांचक लोकगाथाएं**:– सोरठी

लोकगाथाएँ लम्बी होती हैं। इनमें विविध घटनाओं और अनुभूतियों का अंकन होता है। इनमें निहित कथाएँ, अनेक रसों से सम्बद्ध होती है। इनमें विषय की प्रधानता होती है। प्राचीन परम्पराओं को समेटकर चलने वाली ये कथाएं वैयक्तिकता से कोसों दूर, सामूहिकता पर बल देती हैं। गेयता इनका सबसे महत्वपूर्ण तत्व है। इनकी कुछ विशेषताएं इस प्रकार हैं:–

1. लोकगाथाएं लोककंठ द्वारा प्रसारित होती हैं। इनका कोई रचयिता नहीं होता है।
2. इनमें लोक भाषा तथा लोक–कहावतों एवं मुहावरों का प्रयोग होता है।

e-l SSN: 2348-6848
p-l SSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

3. यह बिल्कुल अनगढ़ लोक छन्दों में रचित होती हैं, जिनमें तुकबन्दी का सर्वथा अभाव रहता है।
4. भाव प्रवणता और कल्पना लोकगाथाओं का प्राण होता है।
5. लोकगाथाओं में निर्मल लोक मन झाँकता है। यहाँ ऐतिहासिक एवं सामाजिक तथ्य भी गायक की कल्पनाओं में लिपटकर प्रस्तुत होते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. शर्मा, प्रो0 राम किशोर और शर्मा, डॉ0 शिवमूर्ति–प्रयोजनमूलक हिन्दी, इलाहाबाद, श्यामा प्रकाशन संस्थान।
2. त्रिपाठी, पं0 राम नरेश – कविता कौमुदी, भाग–5 (ग्राम गीत)
3. उपाध्याय, डॉ0 कृष्णदेव–भोजपुरी लोक साहित्य का अध्ययन।
4. आर्चर, डब्लू0जी0–भोजपुरी ग्राम–गीत (बिहार रिसर्च सोसाइटी पटना)
5. गोस्वामी तुलसीदास–राम चरित मानस
6. सिंह, ठा, राम–चारण गीत
7. सत्यार्थी, डॉ0 देवेन्द्र–गिद्धा, बेला फूले आधी रात